Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 05, May - 2024

DOIs:10.2018/SS/202405010 --:-- Research Paper / Article / Review

गाँधी का आजाद भारत

डा. सुनीता
सहायक आचार्य, केन्द्रीय विश्वविधालय हिमाचल प्रदेश
Email :- sunitabodh21@rediffmail.com

आलेख सार: राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक, राष्ट्र पिता, सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी और उनकी आजाद भारत की संकल्पना में, राष्ट्र संस्कृति, संस्कार, राष्ट्र आवश्यकताओं, गौरव, सम्मान का विशेष स्थान है। गाँधी भारतीय मर्यादाओं में आज़ादी के लिए संघर्ष तो, चाहते ही थे साथ ही उन्होंने स्वतंत्र भारत की रूप रेखा भी संजोया हुआ था। जिसमें सामाजिक, आर्थिक असमानता को दूर करने का संकल्प था, स्वदेशी से राष्ट्र को आत्म निर्भर बनाने का उद्देश्य था,(लघु और कुटीर उद्योगों से) राष्ट्र सभ्यता और संस्कृति को सम्मान दिलाने और पुनर्जीवित करने का लक्ष्य था और साथ ही विकेन्द्रित लोकतंत्र की संकल्पना (गाँव की सरकार) भी उन्होंने अपने सपनों के भारत में तैयार किया था। इन सब के पीछे गाँधी की चिंता थी कि किस तरह राष्ट्र अस्मित्ता विदेशी शासन और सभ्यता के नीचे दफन हो रहा था।

संकेत शब्द : सत्य-अहिंसा, लघु-कुटीर उद्योग, विकेन्द्रित लोकतंत्र।

1. पद्दति : प्रस्तुत आलेख में व्याख्यात्मक और विश्लेष्णात्मक पद्दति का प्रयोग किया गया है। इस आलेख में गाँधी के विचारों का विश्लेषण किया गया है कि उनके चिन्तन में स्वतंत्र भारत का चित्र और व्यवस्था।

साहित्य समीक्षा - शोध में साहित्य समीक्षा किसी भी शोध की नीव है। यह शोध की समझ को विकसित करने में सहायता करता है। उपलब्ध साहित्य भविष्य के साहित्य के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। प्रस्तुत शोध में नानावटी का हिन्द स्वराज', कुमार एम्.आर, का ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ हिन्द स्वराज एन फिलोसोफी ऑफ़ सिविलाइज़ेशन, हेरेडिया आर, का गाँधी के हिन्द स्वराज की व्याख्या', मिश्र आर. के, का आधुनिक उद्योगवाद पर गाँधी का दृष्टिकोण', और शर्मा ए, कानून और वकीलों पर महात्मा गाँधी: परिपेक्ष्य' आदि का अध्ययन किया गया है।

नानावटी ने गाँधी के 'हिन्द स्वराज' का अनुवाद किया है हिन्द स्वराज गाँधी ने इंग्लॅण्ड से दक्षिण अफ्रीका जाते हुए लिखी। इसमें गाँधी जी ने अपने विचार को निरुपित किया और बताया है कि भारत की दुर्दशा के लिए अकेले अंग्रेज जिम्मेबार नहीं बल्कि हम भारतीय स्वयं भी जिम्मेबार है। उन्होंने बताया है कि भारत ने आधुनिकता को ही विकास मान लिया है और अपनी सभ्यता से दूर होते जा रहे हैं क्योकि गाँधी भारत को अपनत्व से जोडकर ही विकसित और आजाद देखते थे। **आर. के.मिश्र**,गांधी आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था के खिलाफ थे और वास्तव में वह विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था को महत्व देते थे। युवा शिक्षित भारतीयों से उन्होंने आह्वान किया कि वे ऐसे गाँवों में लौट जाएँ जो न तो रेलवे द्वारा प्रदूषित हैं और न ही आधुनिकता से और जो प्राचीन भारतीय सभ्यता के मूल्यों को संरक्षित करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि गाँधी का आजाद भारत भारतीयता पर आधारित थी। गांधी मशीनीकरण की अवधारणा के भी खिलाफ थे।

2. विषय : गाँधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे, यह अनेकों लघु निबंधों में पढ़ते आये हैं। राष्ट्र स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी का योगदान और नेतृत्व को तो,गाँधी युग के रूप में सभी जानते हैं।राष्ट्र स्वतंत्रता के अतिरिक्त गाँधी राष्ट्र संस्कृति, राष्ट्र पहचान, राष्ट्र गौरव के भी पक्षधर थे, इस तरफ शायद बहुत कम ध्यान दिया गया है, या समाज को इस तरफ कम जागृत करने का प्रयास किया गया है।इसलिए इस आलेख में प्रयास है कि गाँधी के उन विचारों को जो इस राष्ट्र के अस्तित्व से जुडी है का अध्ययन करना।

गाँधी के हिन्द स्वराज से हम सभी परिचित है, जब गाँधी हिन्द स्वराज का दूसरा संस्करण लिख रहे थे, तो उन्होंने लिखा कि, ' यहाँ मैं सिर्फ एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा, मेरे कान में यह बात आई है कि यधपि 'हिन्द स्वराज' लगातार सीख देता रहा है कि हमें किसी भी स्थिति में, किसी भी समय शरीर बल का आश्रय नहीं लेना चाहिए और अपना साध्य सदा आत्मबल से ही प्राप्त करना चाहिए।लेकिन सीख जो भी रही हो,परिणाम की दृष्टि से उससे अंग्रेजों के प्रति तिरस्कार का भाव और उनके साथ हथियारों से लड़कर या और किसी तरह मारकर भारत से निकाल देने का विचार पैदा हुआ है।यह सुनकर मुझे दुःख हुआ। 'हिन्द स्वराज'लिखने में यह हेतू बिलकुल नहीं था।और मुझे कहना पड़ेगा कि उसमें से जिन लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है वे उसे बिलकुल नहीं समझे हैं।मैं स्वयं अंग्रेजों के या अन्य किसी भी राष्ट्र की जनता या व्यक्तियों के प्रति तिरस्कार की दृष्टि नहीं रखता।'

गाँधी के यह विचार सिद करते हैं कि मानवता के प्रति भारतीय दृष्टिकोण उनके रगों में था, इसी कारण वे किसी का बुरा नहीं चाहते थे।भारतीय संस्कारों की झलक गाँधी चिंतन और कार्यशैली में हम स्पष्ट देख सकते हैं। क्योंकि भारत का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि हमने कभी किसी का तिरस्कार, शोषण और किसी राष्ट्र की अस्मित्ता पर आकर्मण नहीं किया। अपने संस्कारों की यही भाव हम गाँधी चिंतन में देख सकते हैं। इसी कारण गाँधी अंग्रेजी सभ्यता और संस्कारों के विरोधी थे।

हिन्द स्वराज के चौथे संस्करण 1921 में उन्होंने लिखा है, 'लंदन में रहने वाले एक नामी अराजकतावादी हिन्दुस्तानी के सम्पर्क में मैं आया था।उनकी शूरवीरता का असर मेरे मन पर पड़ा था, लेकिन मुझे लगा कि उनके जोश ने उलटी राह पकड़ ली है।मुझे लगा कि हिंसा हिंदुस्तान के दुखों का इलाज नहीं है और उसकी संस्कृति को देखते हुए उसे आत्म रक्षा के लिए कोई अलग और ऊँचे प्रकार का शास्त्र काम में लाना चाहिए।'

गाँधी के इसी सोच को उनके व्यावहारिक जीवन में सम्पूर्ण राष्ट्र ने देखा है, जिसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उचित साध्य की प्राप्ति के लिए उचित साध्य का प्रयोग की गाँधी जी की संकल्पना उनके द्वारा दी हुई नवीन सिदांत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कारों की ही एक विशेषता है। गाँधी जी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति जो उनके लिए जीवन ध्येय (साध्य) था, के लिए अहिंसा को साधन के रूप में चुना।

हिन्द स्वराज में उन्होंने लिखा है कि मैं पाठकों को चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे ऐसा न मान ले कि जिस स्वराज की तस्वीर मैंने खड़ी की है वैसा स्वराज खड़ी करने के लिए मेरी कोशिशें चल रही है।मैं जानता हूँ कि अभी हिंदुस्तान इसके लिए तैयार नहीं है।लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि इसमें जिस स्वराज्य की तस्वीर मैंने खींची है, वैसा स्वराज पाने की मेरी निजी कोशिश जरुर चल रही है।लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि आज मेरी सामूहिक प्रवृति का ध्येय तो हिंदुस्तान की प्रजा की इच्छा के मुताबिक पार्लियामेंटरी ढंग का स्वराज पाना है।

गाँधी लिखते हैं कि पुस्तक में बताये हुए कार्यक्रम के एक हिस्से पर आज अमल हो रहा है, वह है अहिंसा।लेकिन मैं अफ़सोस के साथ कबूल करूंगा कि उसका अमल भी इस पुस्तक में दिखाई हुई भावना से नहीं हो रहा है।अगर हिंदुस्तान प्रेम के सिदान्त को अपने धर्म के एक सक्रिय अंश के रूप में स्वीकार करे और उसे अपनी राजनीति में शामिल करें, तो स्वराज स्वर्ग से हिंदुस्तान की धरती पर उतरेगा।लेकिन मुझे दुःख के साथ इस बात का भान है कि ऐसा होना बहुत दूर की बात है।

गाँधी के हिन्द स्वराज में आजाद भारत का चित्र है और उस चित्र में भारत पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी संस्कृति और पश्चिमी ओद्योगिकीकरण से अलग है ।इसमें आर्थिक रूप से आत्म निर्भर भारतीय गाँव, पंचायत स्तर पर निर्वाचित लोकतांत्रिक शासन तथा हस्तशिल्प जैसे काम के गैर-अलगाव रूपों का महत्व हिन्द स्वराज में है ।गाँधी भारतीय सभ्यतागत, संस्कृति आधारित,मूल्यों को विशेष स्थान देते हैं ।गाँधी अपने चिन्तन में 'पर्याप्तता'को विशेष महत्व देते है ।क्योंकि गाँधी आध्यात्मिक थे,भौतिकवादी नहीं ।जिस तरह उनका जीवन सरल और सहज रहा, वैसे ही उनके विचार भी रहे ।

गाँधी लिखते हैं, 'जितना अधिक हम जूनून में लिप्त होते हैं, वे उतने ही बेलगाम होते जाते हैं ।इसलिए, हमारे पूर्वजों ने हमारे भोग की एक सीमा निर्धारित की ।' मानवीय भावनाओं को सिमित करने के गाँधी के विचार के दो अन्य परिणाम है, एक यह अच्छे आचरण की ओर ले जाता है और दूसरा यह अहिंसक व्यवहार और दृष्टिकोण की ओर ले जाता है ।

हिन्द स्वराज में यदि गाँधी के केन्द्रीय विचार पर दृष्टि डाली जाये तो,उनका केन्द्रीय विचार पश्चिमी सभ्यता पर उनके हमले से उभरता है ।गाँधी अपने जीवन अनुभव से यह पाते हैं कि शारीरिक कल्याण और इच्छाओं को जीवन का उदेश्य, सभ्यता का लक्ष्य बनाकर, पश्चिमी समाज ने अन्य जीवन मूल्यों और उद्देश्यों के लिए अपनी चिंता खो दी है ।पश्चिम की इस सोच में सम्पूर्णता नहीं है ।शारीरिक कल्याण या शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सर्वकल्याण के लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती है ।शारीरिक कल्याण का अर्थ यदि भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति है तो,इससे केवल धनवानों का ही कल्याण होता है ।इसी तरह पश्चिमी आर्थिक विकास के भी गाँधी समर्थक नहीं ।क्योंकि उनका मानना था कि पश्चिमी औध्योगिकिकरण से बहुतों को दुःख ही मिला है ।वे लिखते हैं, 'पहले आदमी खुली हवा में उतना ही काम करते थे, जितना उन्हें अच्छा लगता था ।अब हजारों मजदूर मिलकर कारखानों या खदानों में काम करते हैं ।उनकी हालत जानवरों से भी बदतर है ।वे अपनी जोखिम पर मिलमलिकों, पूंजीपतियों के लिए काम करने के लिए बाध्य है ।पश्चिमी आर्थिक विकास और औध्योगिकिकरण ने पैसे के लालच और पैसे से खरीदी जाने वाली विलासिता के गुलाम लोगों को बनाया है ।जिस कारण अब ऐसी बीमारियाँ है जिनके बारे में लोगों ने पहले कभी सपने में भी नहीं सोचा था, और डाक्टरों की एक सेना उनके इलाज का पता करने में लगी हुई है और इसलिए अस्पतालों में वृदि हुई है ।यह सभ्यता की परीक्षा है ।

पश्चिमी सभ्यता और विकास के पायदान और परिणाम से गाँधी पहले से ही अवगत थे, जिस कारण वे कभी इसके समर्थक नहीं हुए ।क्योंकि वे जानते थे कि इसके परिणाम घातक ही होंगे और आज के सन्दर्भ में देखें तो गाँधी के विचार और दूर दृष्टि कितने सटीक रहे ।आज जीवन संघर्ष किसी उद्देश्य प्राप्ति के लिए नहीं है, विलासिता और भोग की वस्तुओं के लिए है ।संसाधनों का शोषण भी गलत तरीके से हो रहा है, विकास के नाम पर पर्यावरण, वन,जंगल,पशु- पक्षी सब का शोषण और महामारी यह सब पश्चिमी तौर-तरीकों और विकास के नाम पर हो रहे अन्धानुकरण के कारण ही हो रहा है ।जो भारतीय संस्कृति और सोच,चिंतन से बिलकुल दूर है ।

3. आज़ाद भारत की संकल्पना :

जब प्राचीन भारत की बात होती है, तो बात होती है आदर्श संस्कृति, आदर्श सभ्यता, आर्थिक समृधि, राष्ट्र गौरव सम्मान की ।परतंत्र भारत में राष्ट्र की इस सनातन धरोहर की रक्षा का दायित्व लेने वाले राष्ट्र प्रेमियों की बात होती है तो,गाँधी भी अग्रिम पक्ति में आते हैं ।क्योंकि गाँधी ने इसके विपरीत किसी नई संस्कृति को उजागर नहीं किया है ।बल्कि इन्हीं मूल्यों को आधार बना कर आज़ाद भारत का चिंतन किया ।गाँधी के भविष्य के भारत की सभ्यता और विकास का आधार पश्चिम कभी नहीं रहा ।गाँधी ग्रामीण भारत को विकास का आधार मानते थे ।

4. आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना :

जब आज आत्म-निर्भर भारत की बात हो रही है, तो गाँधी को हम भूल नहीं सकते हैं।महात्मा गाँधी भारत को आत्म निर्भर देखने वाले शुरूआती विचारकों में से एक थे।गाँधी हिन्द स्वराज के साथ ग्राम स्वराज की बात करते हैं।गाँधी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और आत्म निर्भरता को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए विकास का एक स्पष्ट और वैकल्पिक आधार प्रस्तुत किया।उन्होंने एक ओर, स्थानीय क्षेत्र के झुकाव और जमीनी स्तर पर भागीदारी,स्थानीय समूदाय की भूमिका और समुदाय के भीतर उत्पादन, निर्माण और जरुरुतों को पूरा करने और टिकाऊ जीवन जीने की क्षमता पर अपने विचार और रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, वहीं उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर हर इकाई की स्वतंत्रता के साथ देश को पूर्ण स्वराज के लिए सशक्त बनाया।

गाँधी के आत्म-निर्भर भारत की संकल्पना में आर्थिक व्यवस्था और अर्थव्यवस्था का ढांचा बड़े स्तर के उद्योगों पर आधारित न होकर स्वायत और ग्रामीण उद्योग धंधों पर केन्द्रित है।गाँधी का आर्थिक विचार प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित है, जिसमें कुटीर-उद्योग धंधों को प्राथमिकता देने की बात है।गाँव का विकास गांवों के संसाधनों के माध्यम से करने का विचार है।गाँव की सरकार गाँव के लोगों द्वारा संचालित करने की बात है।गाँधी विचार प्रकृति की और लौटने का आवाहन करती है।गाँधी जी का ध्यान आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति की और था, इसलिए वे चाहते थे कि लोग अपनी आवश्यकताओं को कम कर लें।क्योंकि अधिक आवश्यकताओं और इच्छाओं से ही सामाजिक बुराइयाँ पनपती है।इन्हीं इच्छाओं से शोषणकारी प्रवृतियों का जन्म होता है।सामाजिक असमानता का जन्म होता है।

5. गाँधी के सपनों का भारत (विश्लेष्ण):

गाँधी के सपनों का भारत, जिसमें एक खुला और आधुनिक समाज की संकल्पना है, जहाँ लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कुछ आदर्श ज्ञान मूल्यों के साथ-साथ होगा और अपने पारम्परिक सम्मान और पहचान को खोएगा नहीं।गाँधी कहते हैं कि, उनके घर में खिड़कियाँ होंगी, जिनके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के सभी विचारों की हवा स्वतंत्र रूप से बहेगी।धर्म को राजनीति और सार्वजनिक जीवन से कड़ाई से अलग करने के पश्चिमी अर्थों से गाँधी का भारत धर्मनिरपेक्ष नहीं होगा।लेकिन यह बहुलता का सम्मान करेगा, विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता रखेगा।धर्म,जाति,लिंग के आधार पर भेदभाव को कम किया जायेगा।ग्राम स्वराज्य में सर्वोदय अनिवार्य रूप से शामिल होगा और तब गाँधी का भारत लापरवाह औध्योगिकिकरन को ख़ारिज कर देगा।गाँधी मानव पैमाने के उद्योगों के खिलाफ नहीं थे।खादी और चरखे पर उनकी वकालत को अक्सर उद्योगों के विरोधी के रूप में देखा गया, जबकि गाँधी इनके माध्यम से गरीबों के कारीगरी कौशल और आजीविका की रक्षा कर रहे थे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कृषि पर अत्यधिक निर्भरता से मुक्त करके आत्म-निर्भर बनाने के विचार को बढ़ावा दे रहे थे।गाँधी प्राकृतिक संसाधनों का शोषण नहीं चाहते थे।इसलिए कृषि के साथ छोटे उद्योगों को भी विकसित कर संसाधनों के दोहन और निर्भरता को विकल्प दे रहे थे।कम आवश्यकताओं की सोच को विकसित करने की बात करते थे।उन्होंने कहा था, 'पृथ्वी के पास हर किसी की जरूरत के लिए पर्याप्त है,एक व्यक्ति के लालच के लिए नहीं।

6. निष्कर्ष :

इस तरह हम देखते हैं कि गाँधी का आजाद भारत, भारत की व्यवस्था, समाज, राजनीति, धर्म, संसाधन, आजीविका, सभ्यता और संस्कार सम्बन्धी सम्पूर्ण दृष्टिकोण में अपनी संस्कृति, सभ्यता, वातावरण की ही छवि है। गाँधी का हिन्द स्वराज वास्तव में हिंदुस्तान का अपना राज्य और ग्राम स्वराज, गाँव की सरकार की संकल्पना पूरी तरह से भारतीय वातावरण (भारत गाँव का देश है) के अनुरूप है। मोहनदास कर्मचन्द गाँधी ने 1909 में एक छोटी सी पुस्तक लिखी अपनी मात्रभाषा गुजराती में जब एक जहाज से लंदन से दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे। गाँधी ने इसे एक पाठक और संपादक के बीच संवाद के रूप में लिखा है। जिसमें उन्होंने स्वराज को स्वशासन के रूप में देखा है और स्वशासन में गाँधी भारत को स्वयं से भूलता देख चिंतित है। उन्होंने लिखा है, 'भारत का पतन हो रहा है, अंग्रेजी एड़ी के नीचे नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता के तहत। यह राक्षस के भयानक वजन के नीचे कराह रहा है। इससे बचने का समय अभी बाकि है, लेकिन हर दिन इसे और अधिक कठिन बना देता है।'इस तरह हिन्द स्वराज में गाँधी भारत की खो रही अस्मित्ता के लिए चिंतित है और राष्ट्र को जगाने के लिए आतुर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. नानावटी अ.ट; (1949) (अनुवादक) 'हिन्द स्वराज' नवजीवन मुद्रणालय, (पृष्ठ 19-21) अहमदाबाद 360014.
2. कुमार एम्.आर; ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ हिन्द स्वराज एन फिलोसोफी ऑफ़ सिविलाइज़ेशन : 'dspace.nehru.ac.in/bitstream
3. हेरेडिया आर; (1999). गाँधी के हिन्द स्वराज की व्याख्या' आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक: *34* (24), (पृष्ठ 1497-1502)
4. मिश्र आर. के;(2014). आधुनिक उद्योगवाद पर गाँधी का दृष्टिकोण'आपका लेख पुस्तकालय: .
5. शर्मा ए; (2019). कानून और वकीलों पर महात्मा गाँधी: परिपेक्ष्य'पत्रक